International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2016; Page No. 59-60

प्रवासी साहित्य के सन्दर्भ में मॉरीशस का कथा साहित्य

मनीषा

सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, गवर्नमैंट कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, लुधियाना पंजाब, भारत।

प्रस्तावना

इस बात में कोई दो राय नहीं है कि किसी भी राष्ट्र की संस्कृति और उसके भीतरी–बाहरी सामाजिक संरचना आदि को समझने के लिए वहॉ का साहित्य, विषेषकर कथा–साहित्य माध्यम होता है। फिर चाहे वह साहित्य भारतीय हो या पाश्चात्य। अखिल विश्व में साहित्य के परिप्रेक्ष्य में यदि हम देखें तो पाते हैं कि आज का विश्व साहित्य नाना प्रकार की विधाओं से समृद्ध है जिसमें प्रवासी साहित्य विशेषतः उसका कथा साहित्य का भी महत्त्वपूर्ण योग है जो सृजनात्मक साहित्य की निरन्तर प्रवाहमयता को दर्शाता है। प्रवासी साहित्य की बात करें और उसमें भी विशेषतः मॉरीशस का नाम बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। महत्त्वपूर्ण इसलिए नहीं कि वहॉ के सृजनकारों को कोई विशेष ख्याति मिली है वरन् इसलिए है कि मॉरिशस के उपन्यासकारों की संवेदना में नवीनता, व्यापकता और गंभीरता है और इसका प्रमुख कारण यह है कि ''मॉरिशस में डेढ़ सौ साल व्यतीत करने के उपरान्त और देश को स्वतन्त्र करवा लेने के बाद भी मॉरिशवासी अपने उस इतिहास को नहीं भूलते, जो उनके पूर्वजों के गिरमिटिया कुली के रूप में मॉरिशस की भूमि पर पॉव रखने के साथ प्रारम्भ हुआ था। उन पूर्वजों से विदेशी शासकों ने कैसी कठोरता नृशंसता और अमानवीयता से बड़े–बड़े पत्थरों को हटवा कर, तुडवा कर, कृषि योग्य भूमि बनवाई, इस प्रक्रिया का लोमहर्षक चित्रण मॉरिशस के नाना हिन्दी उपन्यासों में उपलब्ध है। ऐसी संवेदना अपने देश में प्रणीत हिन्दी उपन्यासों में दृष्टिगोचर नहीं होती।''[1] बात केवल उपन्यास की ही नहीं है इसके पीछे ही साहित्यिकता की प्रवाहमयता भाषा हिन्दी है यही वजह है कि भारत से बाहर हिंदी देश रूप में मॉरिशस की ख्याति द्रुतगति से बढ़ी है और तो और यहॉ दूसरा और चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन भी सम्पन्न हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन का आयोजन भी यहॉ हुआ। समग्रता में देंखे तो हम पाते हैं कि मॉरिशस में हिंदी की स्थिति और हिन्दी के पठन–पाठन का विस्तार भारत से बाहर के हिन्दी देशों में सर्वाधिक सुदृढ़ है। डॉ0 विनोदबाला अरूण का इस सन्दर्भ में कहना है, ''आज मॉरिशस में अनेक विधाओं में हिंदी का सृजनात्मक लेखन हो रहा है। कहानी, कविता, उपन्यास और नाटक अपेक्षाकृत अधिक लिखे जा रहे हैं।''[2] यह गतिशीलता आज भी अनवरत रूप से विद्यमान है।

मारिशस के सन्दर्भ में यदि हम हिन्दी कथा साहित्य की बात करें तो हम पाते हैं कि उनमें जनजीवन का और आम आदमी के वृहत्तर सुख–दुख का विस्तृत, यथार्थ एवं विश्वसनीय ब्यौरा स्पष्ट देखा जा सकता है। इसलिए डॉ0 हेमराज निर्मम लिखते हैं, ''इन्द्रधनुषों के देश मॉरिशस का हिन्दी उपन्यास मानव जीवन के विविध इन्द्रधनुषों से परिपूर्ण है, जिसका अनुशीलन, मॉरिशस ने देखने पर भी, वहॉ के मज़दूरों के पसीने की कसैली गंध, फैक्टरी में कार्यरत मजदूर–औरतों की व्यवस्था के विरूद्ध फुसफुसाहट, शिक्षा संस्थाओं में युवा वर्ग के हर्षोल्लासपूर्ण प्रेम पगे जीवन और कभी आन्दोलन–पथ पर अग्रसर होते हुए युवाओं के गगनभेदी नारे, बेकार युवकों की विवशता भरी कराहटें, मछवारों के मस्ती भरे गीत, उत्तेजना–दायक सागा नृत्य, शान्त समुद्र तट पर प्रेमियों की क्रीड़ाएँ, सम्पन्न व्यापारियों और कोठी–मालिकों की शोषण–नीतियॉ और वहॉ की अनुपम प्राकृतिक सुषमा पाठक के मानस–पटल पर छाकर उसे अननुभूत सच्चाइयों के साक्षात्कार करवा देती है।''[3] यह साहित्य की अभिव्यक्ति के रूप उस देश के काल विशेष, स्थान विशेष की अभिव्यक्ति होती है। नित्यानन्द तिवारी कहते हैं, ''जीवन की छोटी–छोटी अनुभूतियों में विराट् संवेदनाओं की ओर साहित्य की हर दिशा बढ़ रही है। कहानी में भी संवेदनाएँ अभिव्यक्त हैं। अनुभूतियों और संवेदनाओं का क्षेत्र बहुत व्यापक हुआ है। लेखकों ने बहुत से अपरिचित स्वरों को उभारा है।''[4] इस स्वरों का प्रमुख विषय सामाजिक भी है और सांस्कृतिक भी। इसमें पूजानंद नेमा की 'आग और बाग', अभिमन्यु अनन्त की 'बोझिलमानरक्षा', आस्तानंद सदासिंह की 'हवा तीसरी दुनिया की', साहेबा फर्जेली की 'मिन्त', बेणीमाधव रामखेलावन की 'साहसिनी विधवा', रमेश जीतन की 'परिक्रमा के बाद', सत्यवती जगमोहन की 'एकमुट्ठी अन्न' भानुमती नागदान की 'दोस्ती' आदि कहानियों में टूटते रिश्ते, पारिवारिक विघटन, बलात्कार, पुनर्विवाह आदि सामाजिक कुरीतियों का यथार्थ अंकन देखने को मिलता है। इन सबसे इतर सांस्कृतिक स्तर पर भी हिंदी भाषियों ने अपने पहचान बनाए रखी है। जिसमें दूसरे देशों के लोगों के आगमन से सांस्कृतिक प्रभावों और मेल–मिलायों का अंकन हुआ है। यथा 'कार्तिक नहान' (सनातन धर्माक), ब्राह्मण (सनातन धर्माक), सीपियों की थैली (शैलनंदन, जागृति) आदि महतनीय है। अपनी भाषा और संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष संबंधी कथानकों को लेकर लिखी गई 'पश्चाताप और शिक्षा, हिन्दी की पुकार, मजदूर का पुत्र और गुरू जी आदि कहानियॉ समाज द्वारा अपनी सांस्कृतिक पहचान को गरिमामंडित करने के हेतु किये जा रहे प्रयत्नों को रेखांकित करती है।''[5]

व्यापकता में देखे तो हम मॉरिशस के कथा–साहित्य में उपन्यास ने वहॉ के इतिहास को सर्वाधिक उपजीव्य बनाया है। इसलिए उनमें मॉरिशस का इतिहास मूर्तिमान हो उठता है। इनमें अभिमन्यु अनन्त का नाम विशेष है। डॉ0 हेमराज का कथन है, ''वहॉ का उपन्यास साहित्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध है, अपितु जनजीवन से जुड़े होने के कारण सामाजिक यथार्थ को नवीन कोणों से उद्घाटित करता है। वहॉ ऐतिहासिक एवं सामाजिक यथार्थ से जुड़ी सभी विसंगतियों का विवेचन करते हुए न रचनात्मक सामाजिक शक्तियों और जीवन–मूल्यों का भी गहराई से अध्ययन किया गया है, जो सामाजिक विकास के जीवन तत्त्व के रूप में सदा सक्रिया रहते हैं।''[6] इन कृतिकारों की कृतियों में प्राकृतिक सौन्दर्य और उसके भयंकर प्रभावों के वर्णन से लेकर समस्त मानवीय जीवन की ऊहा–पोह अशिक्षा, दिशा बोधहीनता, असहाय अवस्था, मर्मान्तक निर्धनता, जीवन संघर्ष, नारी की स्थिति, भारतीय संस्कृति, मनोविज्ञान आर्थिक अवस्था, शासन तन्त्र, चिन्तन का वर्णन विद्यमान है। अनन्त के उपन्यासों में एक बीघा प्यार में जहॉ तूफान के कुप्रभाव को दर्शाया है, वहीं दूसरी और लाल पसीना में मजदूर वर्ग की पीड़ा का दर्दनाक ब्यौरा विद्यमान है, रामदेव धुरंधर के 'पूछो इस माटी से' में जहॉ एक ओर गोरे मालिकों द्वारा नवविवाहिता मजदूर युवतियों से बलात् वासना की तुष्टि करने का

व्यापक चित्रण है, वहीं दूसरी ओर नारी के वेश्या, कालगर्ल का रूप शेफाली और अपनी–अपनी सीमा में देखा जा सकता है। ऐसे और भी बहुपरक विषय है जो मॉरिशस के कथा साहित्य में बहुतेरे देखे जा सकते हैं। वैसे भी आज हिन्दी का, हिन्दी के विस्तृतीकरण का फलक वैश्विक पटल पर ज्यादा है। प्रवासी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में मॉरीशस का हिन्दी साहित्य भारत के बाहर के हिंदी देशों के लिए एक प्रेरक आदर्श है, कृतिकारों ने विश्व–साहित्य के अनुभवों को जाना–समझा है और उसके प्रभाव को अपने भीतर समाहित कर उसे अपनी अभिव्यक्ति में भी समेटा है।

अस्तु, प्रवासी साहित्य में मॉरिशस के हिंदी लेखनकारों की कृतियां सांस्कृतिक–धार्मिक मूल्यों, गोरों के अत्याचार–दुराचार, प्रेम–प्रसंग, जीवन संघर्ष की यथार्थ अभिव्यक्ति, प्रवास में झेल रहे मज़दूरों का शोषण कादर्द स्पष्टः मुखरित हुआ है और वैश्विक पटल पर ज़ोरों–शोरों से इस साहित्य में काफी विविधता आ चुकी है और लोकप्रिय भी हृदयों में लोकप्रिय भी हो रहा है।

संदर्भ

1. डॉ0 हेमराज निर्मम – मॉरिशस के हिन्दी उपन्यासों का मूल्यांकन, प्रेम प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली, 1992, पृष्ठ–7
2. विनोदबाला अरूण – मॉरिशस की हिन्दी कथा–यात्रा, विद्या विहार, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ–14
3. डॉ0 हेमराज निर्मम – मॉरिशस के हिन्दी उपन्यासों का मूल्यांकन, प्रेम प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली, 1992, पृष्ठ–7
4. देवीशंकर अवस्थी – 'नई दिल्ली – संदर्भ और प्रकृति की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ–23'
5. विनोदबाला अरूण – मॉरिशस की हिन्दी कथा यात्रा, विद्या विहार, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ–145
6. डॉ0 हेमराज निर्मम – मॉरिशस के हिन्दी उपन्यासों का मूल्यांकन, (भूमिका)।